शैंटिक्लीर और लोमड़

कैन्टरबरी टेल्स पर आधारित

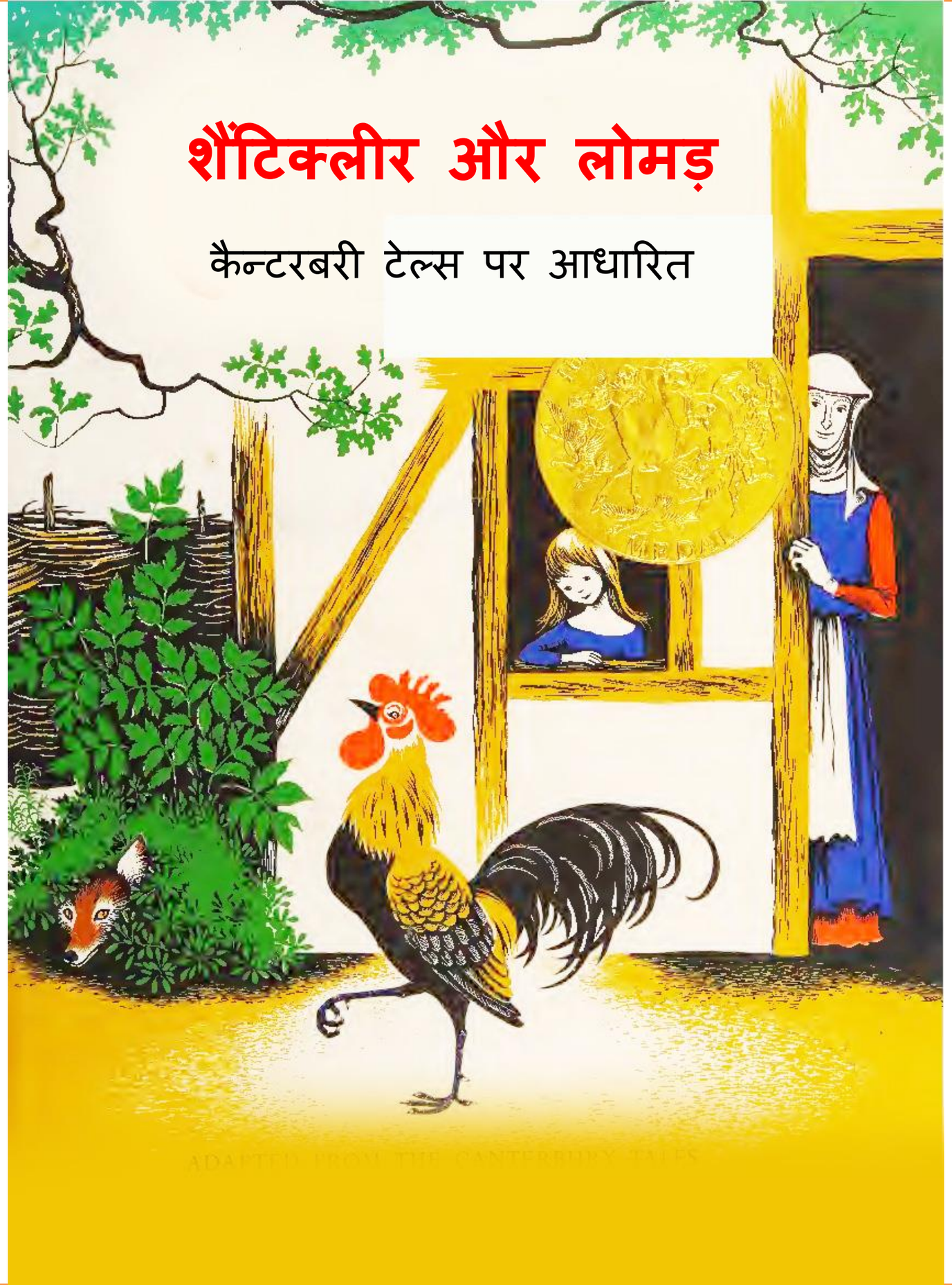

ADAPTED FROM THE CANTERBURY TALES

शैंटिक्लीर और लोमड़

कैन्टरबरी टेल्स पर आधारित

एक समय की बात है कि एक विधवा, जो बूढ़ी हो रही थी, एक छोटी घाटी में पेड़ों के एक झुंड के पास अपनी छोटी सी कुटिया में रहती थी. यह विधवा, जिसकी कहानी मैं सुनाने जा रहा हूँ, अपने पति की मृत्यु के बाद, अपना जीवन बड़े धैर्य के साथ और बड़ी सादगी से बिता रही थी. अपने घर का प्रबंध सावधानी के साथ कर, वह अपनी और अपनी दो बेटियों की देखभाल बड़े अच्छे ढंग से कर रही थी.

उसके पास सिर्फ तीन मादा सूअर, तीन गायें और मॉली नाम की एक भेड़ थी.

उसका शयनकक्ष और उसकी रसोई धूयें से काले हो गये थे. अकसर उसे भरपेट खाना न मिलता था. इसलिए ज़रुरत से अधिक खाने के कारण वह कभी बीमार न हुई. खाने में अधिकतर एक काली और एक सफेद वस्तु-दूध और काली ब्रेड-ही उन्हें खाने को मिलती और इन वस्तुओं की कभी कमी न हुई थी. कभी-कभी भूना हुआ गोश्त और एक या दो अंडे खाने को मिल जाते थे क्योंकि एक प्रकार से वह एक ग्वालिन ही थी.

उसके पास एक अहाता था जिसके चारों ओर लकड़ियों की बाड़ लगी थी. वहाँ शैंटिक्लीर नाम का एक मुर्गा रहता था. सारे देश में उसके समान बाँग देने वाला कोई और मुर्गा न था. उसकी बाँग चर्च के सबसे सुरीले वाद्ययंत्र से अधिक सुरीली थी. आराम करने के स्थान से आती उसकी बाँग घड़ी से अधिक विश्वसनीय थी. उसकी कलगी किसी श्रेष्ठ मूंगे से अधिक लाल थी और किसी किले की दीवार से अधिक कंगूरेदार. उसकी चोंच काली थी और जेट पत्थर के समान चमकती थी. उसकी टांगें और पांव गहरे नीले थे. उसके नाखून लिली से भी अधिक सफेद थे और उसके पँख चमकीले सुनहरी थे.

उस शानदार मुर्गे की सात मुर्गियाँ थीं जो उसके समान ही रंगबिरंगी थीं. जो मुर्गी सबसे सुंदर थी उसका नाम था कुमारी पार्टलेट. वह विनम्र, समझदार, खुशमिजाज़ और मिलनसार थी. जब वह सात दिनों की थी तब से उसका व्यवहार इतना मधुर था कि शैंटिक्लीर उसे बहुत चाहने लगा था. सूर्योदय के समय उनको एक साथ एक सुंदर लय में गाते सुनना बड़ा आनंदवर्धक था. उन दिनों, ऐसा मैंने सुना है, सब पशु और पक्षी बातें कर सकते थे और गा भी सकते थे.

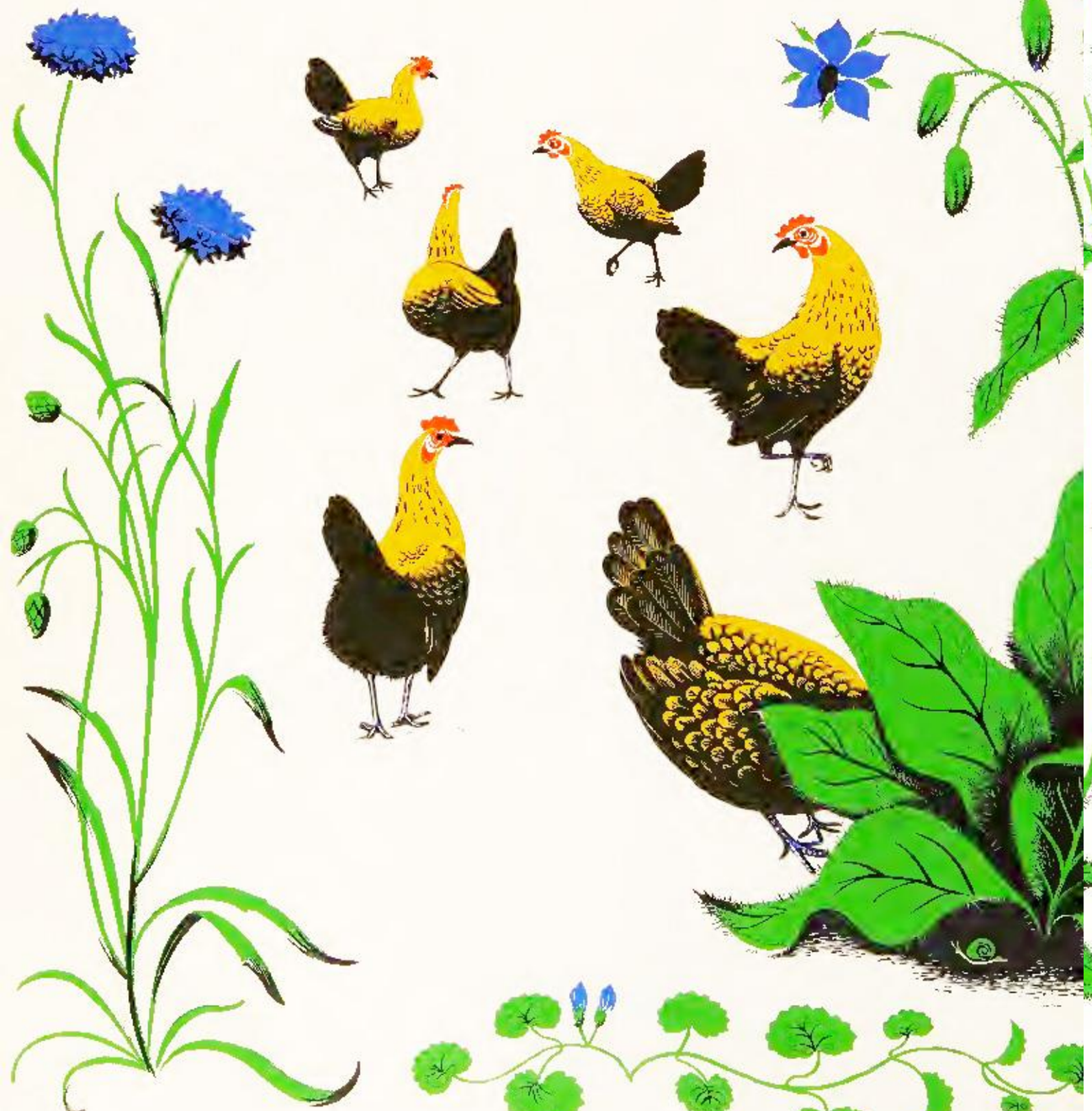

फिर एक दिन भोर के समय, जब शैंटिक्लीर अपनी मुर्गियों से घिरा मचान पर बैठा था कि वह एक मनुष्य की भांति आह भरने लगा, जैसे कि उसने कोई बुरा सपना देखा हो. जब पार्टलेट ने उसे इस तरह कराहते हुए देखा तो वह भयभीत हो गई. उसने कहा, “प्रिय, तुम्हें क्या कष्ट है जो तुम इस तरह कराह रहे हो?”

और मुर्गे ने कहा, “मैंने अभी-अभी सपना देखा कि मैं बहुत बड़े संकट में फंसने वाला हूँ. सपने में मैंने देखा कि मैं अपने उस अहाते में चक्कर लगा रहा था और तभी मैंने शिकारी कुत्ते जैसा एक जंगली जानवर देखा जो मुझे पकड़ने की कोशिश कर रहा था. वह तो मुझे मार ही डालता. उसका रंग कुछ लाल और पीला जैसा था, उसकी पूँछ और कान काले थे, बाकी शरीर से बिलकुल अलग. उसकी थूथन छोटी थी और उसकी आँखें चमक रही थीं. उसे देख कर मैं डर से मर ही गया. निस्संदेह यही दृश्य देख कर मैं कराहने लगा था.”

“अरे!” मुर्गी ने कहा. “धिक्कार है, तुम जानते हो कि मैं एक डरपोक से प्यार नहीं कर सकती, निश्चय ही. क्या तुम बड़ी कलगी वाले एक निडर मुर्गे नहीं हो? प्रसन्न रहो, सपनों से भयभीत न होते.”

“धन्यवाद, पार्टलेट,” मुर्गे ने कहा, “तुम्हारी इस समझदारी भरी सलाह का लिए धन्यवाद. मुझे कहना ही पड़ेगा कि जब मैं तुम्हारा सुंदर चेहरा देखता हूँ तो मेरा डर गायब हो जाता है.”

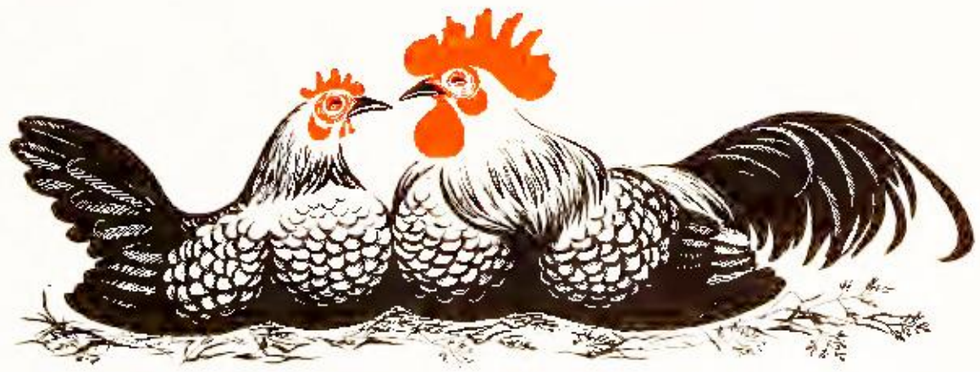

यह बात कह कर मुर्गा, अपनी मुर्गियों के साथ, उड़ कर मचान से नीचे आ गया क्योंकि उस समय दिन था. उसने पुकार कर मुर्गियों को उस अनाज की ओर बुलाया जो अहाते में एक जगह उसे मिला था. अपने महल में रह रहे एक राजकुमार के समान वह गर्वीला था और अब वह भयभीत भी न था. एक शेर के समान वह अहाते में घूम रहा था, उसके पाँव धरती को छू ही न रहे थे.

अभिमान से अपनी सातों पत्नियों के साथ चलते हुए शैंटिक्लीर ने चमकते हुए सूर्य को देखा. प्रसन्न आवाज़ में उसने कहा, “सुनो, पक्षी कितनी प्रसन्नता से गा रहे हैं, नये फूल कितनी सुंदरता से खिले हुए हैं, मेरा मन आनंद से झूम रहा है.”

लेकिन अचानक एक दुखद घटना उसके साथ घट गई.

एक काला धूर्त लोमड़ वहाँ उस पेड़ों के झुंड में रहता था. उसी रात वह लोमड़ झाड़ियों का बाड़ा पार कर उस अहाते में आ गया था जहाँ शैंटिक्लीर अपनी मुर्गियों के साथ घूमा करता था. लोमड़ चुपचाप एक जगह छिप कर अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था.

पार्टलेट अन्य मुर्गियों के साथ रेत में बैठी धूप का मज़ा ले रही थी. उसकी पीठ सूरज की ओर थी और शैंटिक्लीर समुद्र की एक जलपरी से अधिक प्रसन्नता से गा रहा था.

अब जैसे ही उसने झाड़ियों पर बैठी एक तितली पर दृष्टि डाली शैंटिक्लीर को झाड़ियों में छिप कर बैठा लोमड़ दिखाई दिया. बाँग देने की उसकी कोई इच्छा न थी लेकिन वह चिल्लाया, “कॉक! कॉक!” और एक भयभीत प्राणी की तरह वह उछल पड़ा.

और वह वहाँ से तुरंत भाग जाता लेकिन तभी लोमड ने कहा, “अरे श्रीमान, आप कहाँ जा रहे हैं? आप आपने पिता के मित्र से डर रहे हैं? मैं तो सिर्फ आपका गाना सुनने आया था. क्योंकि सच में आपकी आवाज़ स्वर्ग के फरिश्ते समान है. आपके पिता-ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे- और आपकी शालीन माँ ने एक बार मेरे घर पधार कर मुझे बहुत सम्मानित किया था. आपके सिवाय मैंने आज तक किसी को उस तरह सुबह के समय गाते नहीं सुना जिस तरह आपके पिता गाते थे. अपनी आवाज़ को ऊँचा करने के लिए वह अपनी आँखें बंद कर लेते थे. और फिर अपने पंजों के बल खड़े हो कर वह अपनी पतली गर्दन को सीधा ऊपर उठा कर बाँग देते थे. आप भी उसी तरह बाँग दें. मैं देखना चाहता हूँ कि क्या आप अपने पिता की तरह सुरीला गा सकते हैं?”

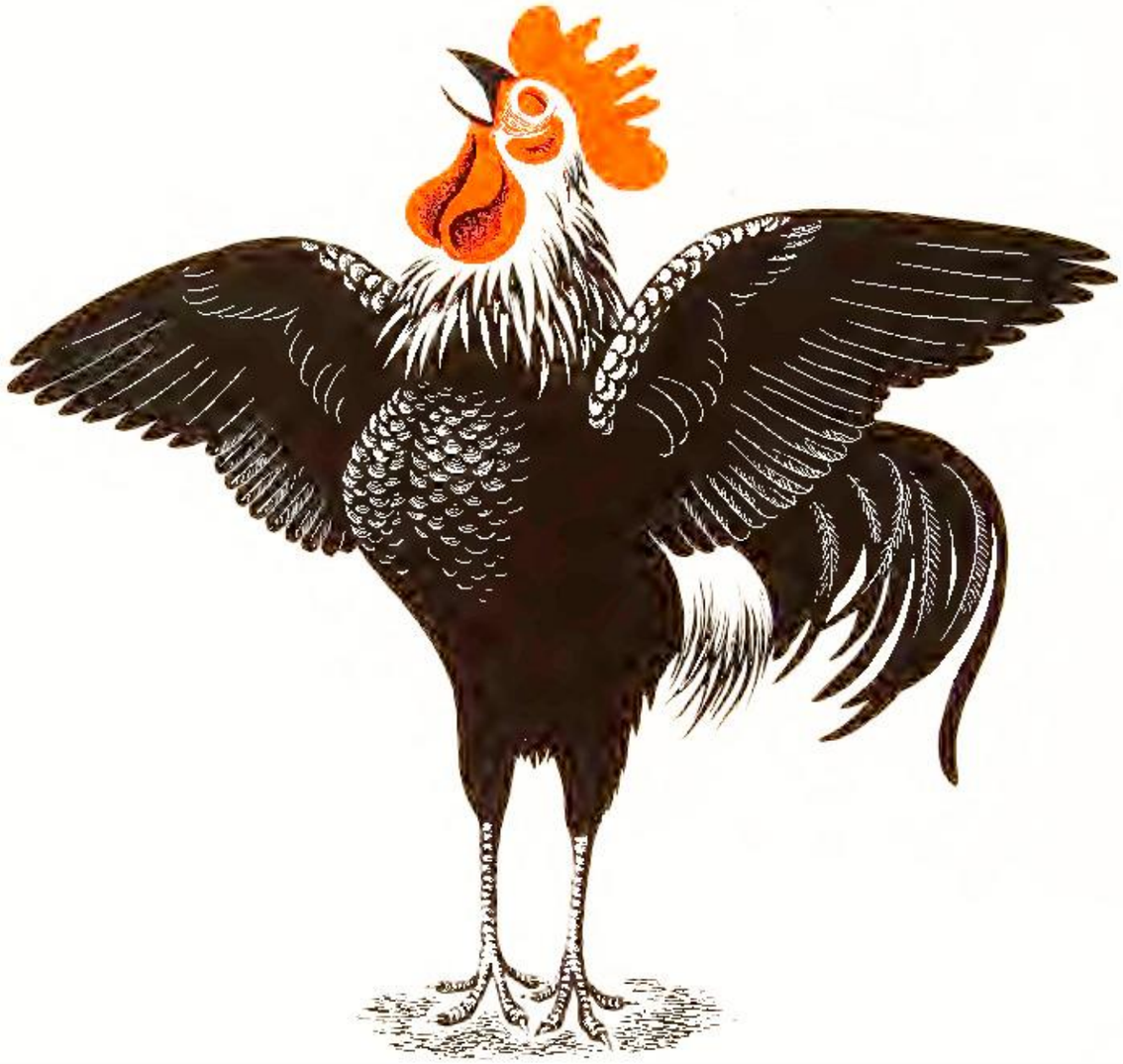

शैंटिक्लीर अपने पँख फड़फड़ाने लगा. वह अपने पँजों के बल खड़ा हो गया. अपनी गर्दन को सीधा तान दिया. उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और ज़ोर से बाँग देने लगा. उसी पल लोमड़ उस पर झपटा, उसने शैंटिक्लीर को गले से पकड़ लिया और उसे जंगल की ओर ले चला.

हाय, शैंटिक्लीर अपनी मचान से नीचे आ गया! हाय, पार्टलेट ने उसके सपने की कोई परवाह न की! और यह संकट की घड़ी शुक्रवार के दिन आई.

जब मुर्गियों ने शैंटिक्लीर को लोमड़ की पकड़ में देखा तो उन्होंने इतना शोर किया जितना शोर पहले कभी किसी न किया था. उस अभागी विधवा और उसकी बेटियों ने जब मुर्गियों का क्रंदन सुना तो वह सब भाग कर घर के दरवाज़े पर आ गईं. उन्होंने देखा कि लोमड़ मुर्गे को अपने मुँह में दबोचे पेड़ों के झुंड की ओर भाग रहा था. “मदद करो! मदद करो! देखो, लोमड़ हमारा मुर्गा लेकर भाग रहा है,” वह तीनों चिल्लाईं और लोमड़ के पीछे भागीं.

उनकी चीख-पुकार सुन कर, गायें और भेड़ और यहाँ तक कि सूअर भी भयभीत हो गए और लोमड़ के पीछे भागने लगे. वह सब इतनी तेज़ भाग रहे थे कि उन्हें लगा कि उनके दिल फट जायेंगे.

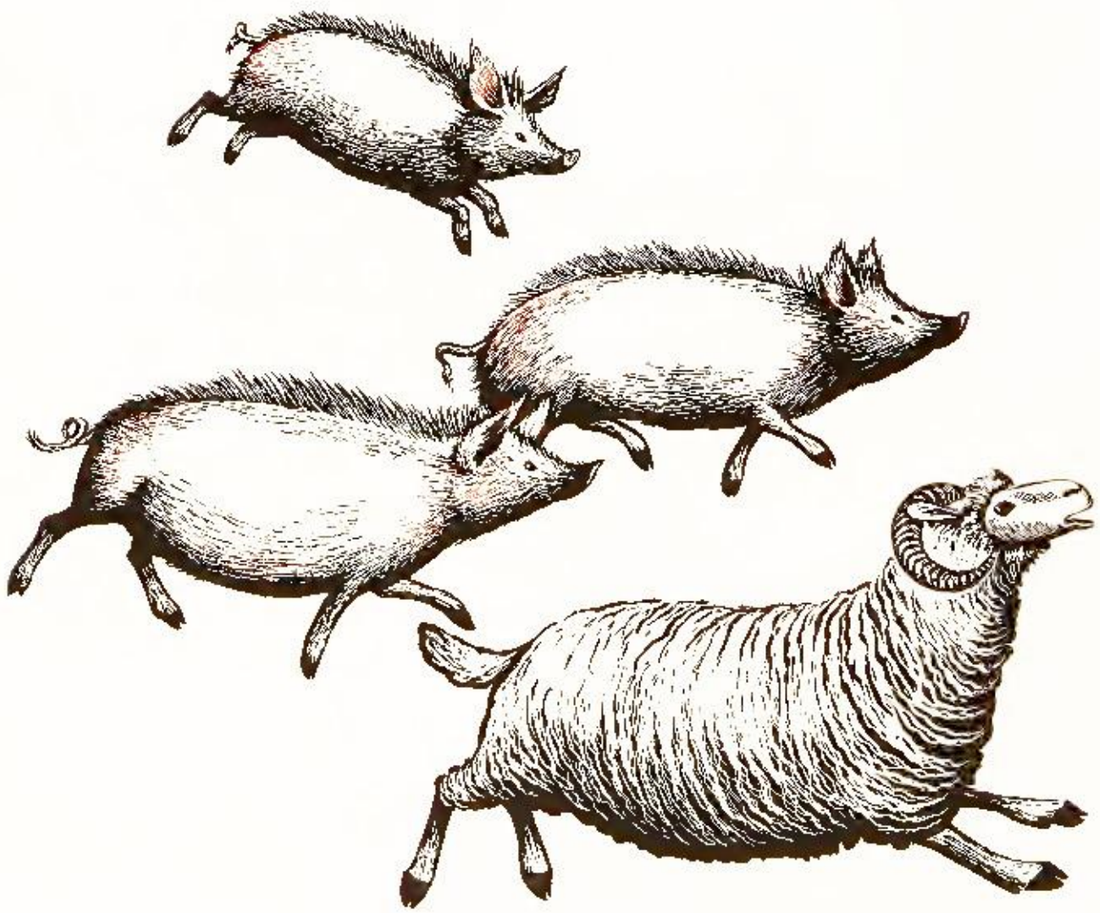

पड़ोसी की बतखें इस तरह चिल्लाने लगीं जैसे कि कोई उन्हें मारने वाला था. और उनके हंस डर कर पेड़ों के ऊपर उड़ने लगे. इतना भयंकर शोर था कि मधुमक्खियाँ अपने छत्तों सा बाहर आ गईं. ऐसा लग रहा था कि आसमान फट जायेगा.

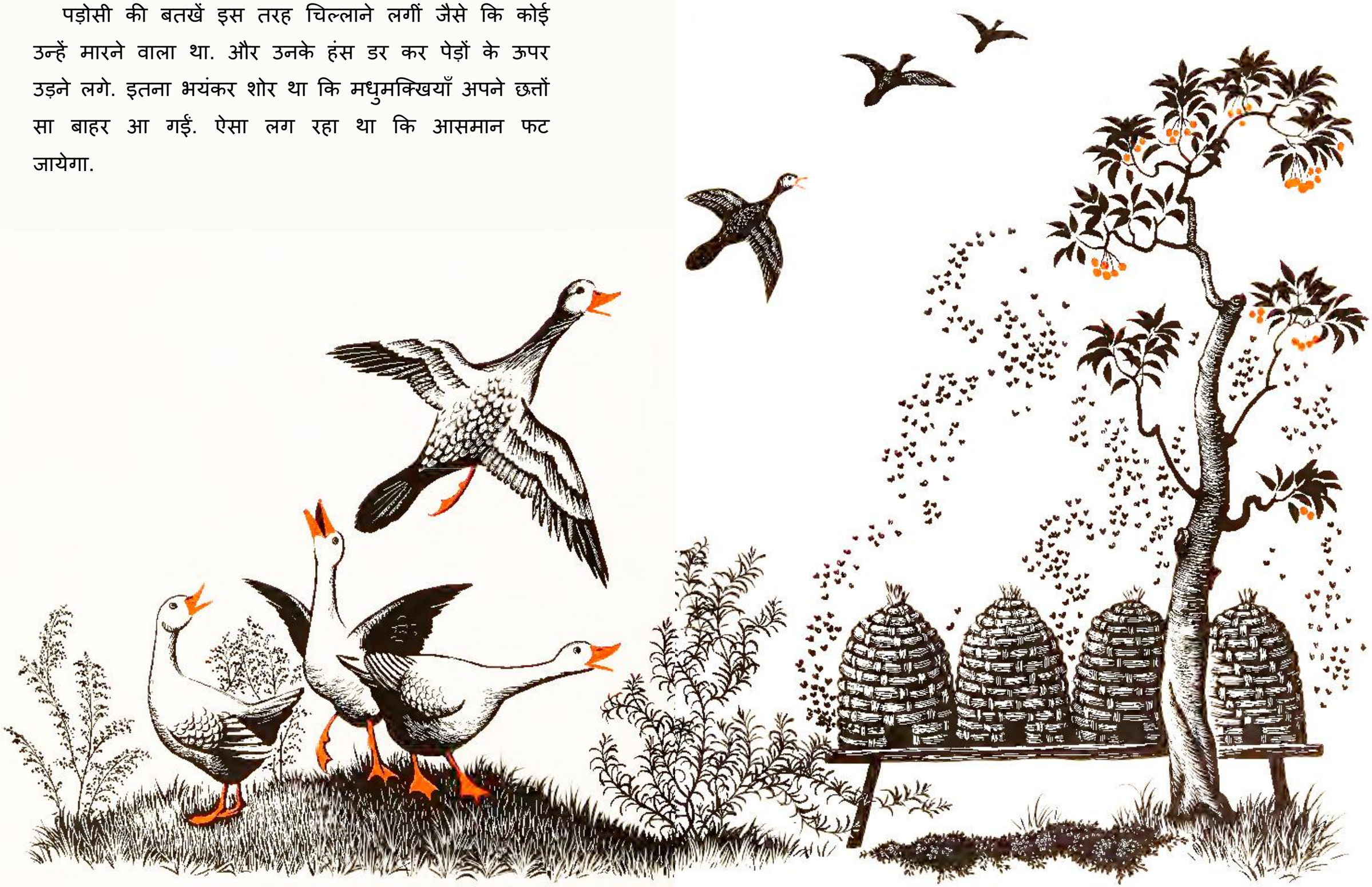

सज्जनों मेरी बात ध्यान से सुनो. अपने डर के बावजूद लोमड़ के मुँह में फंसे मुर्गे ने लोमड़ से कहो, “श्रीमान, अगर मैं आपकी जगह पर होता तो ईश्वर की कृपा से मैं कहता, ‘अरे स्वाभिमानी किसानों, वापस लौट जाओ! मैं जंगल की सीमा तक पहुँच गया हूँ, मुर्गा अब यहीं रहेगा. तुम कितनी भी कोशिश कर लो, मैं इसे खा जाऊँगा और ईश्वर की शपथ ऐसा करने में मैं अधिक समय न लगाऊँगा.’ ”

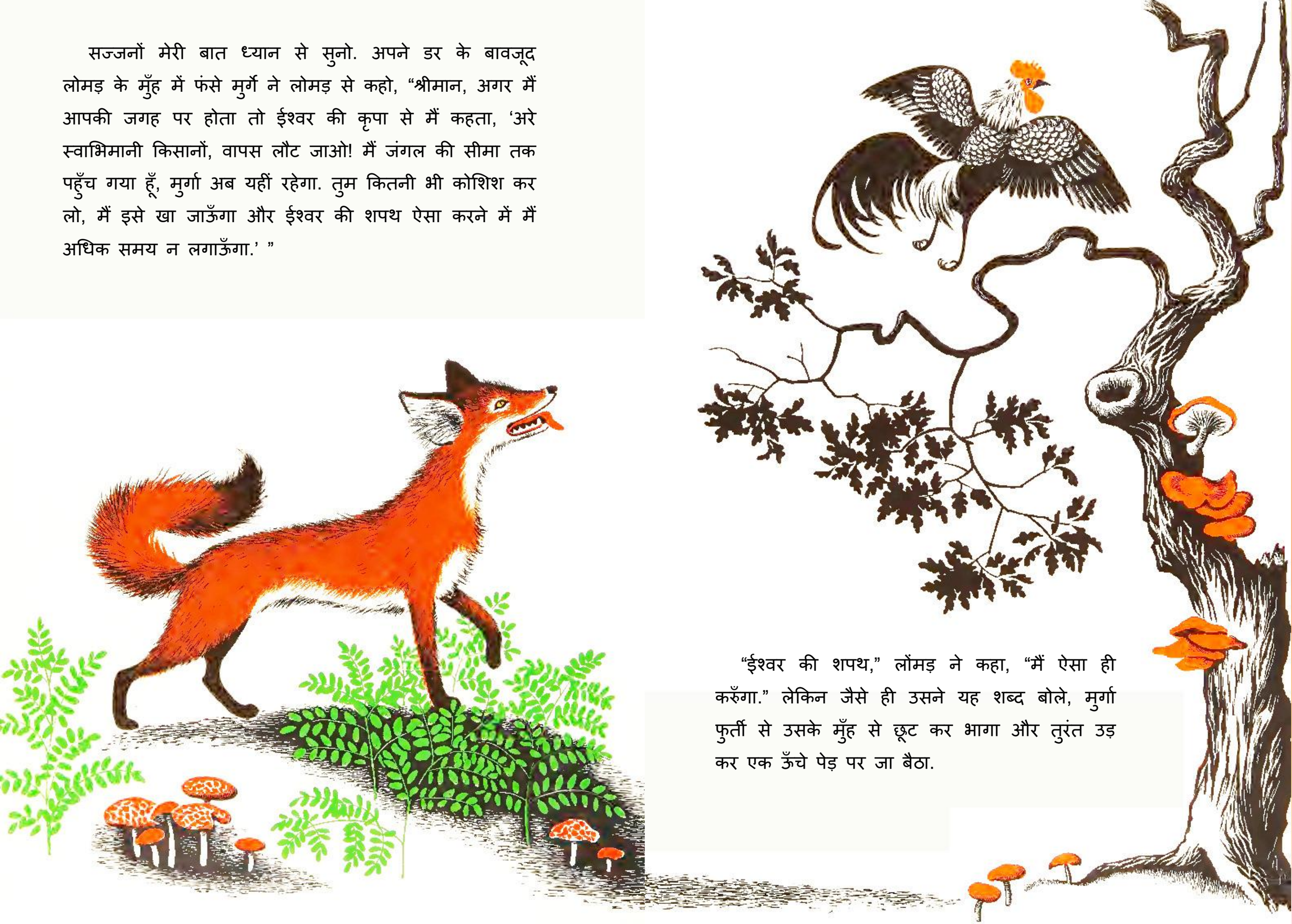

“ईश्वर की शपथ,” लोंमड़ ने कहा, “मैं ऐसा ही करुँगा.” लेकिन जैसे ही उसने यह शब्द बोले, मुर्गा फुर्ती से उसके मुँह से छूट कर भागा और तुरंत उड़ कर एक ऊँचे पेड़ पर जा बैठा.

जब लोमड़ ने देखा कि मुर्गा उसकी पकड़ से छूट गया था उसने कहा, “आह! ओह, शैंटिक्लीर, अफसोस मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया. जब मैं तुम पर झपटा और पकड़ कर तुम्हें अहाते से बाहर ले आया मैंने तुम्हें भयभीत कर दिया. लेकिन मैंने यह किसी बुरे इरादे से न किया था. नीचे आ जाओ और मैं तुम्हें समझाता हूँ कि मैंने ऐसा क्यों किया.”

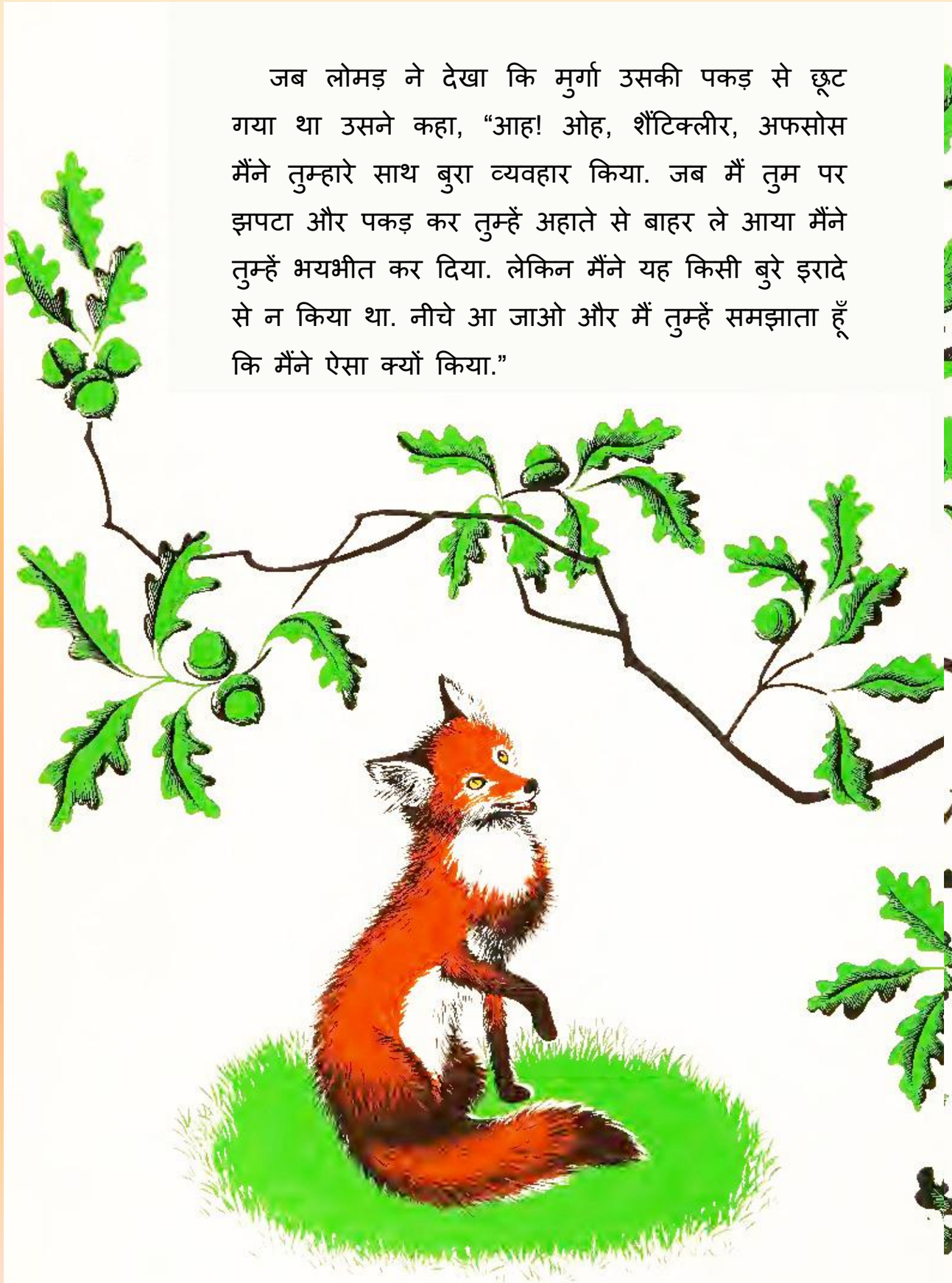

“नहीं,” शैंटिक्लीर ने कहा. “अब तुम्हारी चापलूसी मुझे आँख बंद कर गाने के लिए प्रेरित न करेगी. क्योंकि अगर कोई प्राणी उस समय अपनी आँखें बंद कर लेता है जब उसे सावधान होना चाहिए तो ईश्वर उसका कभी कल्याण नहीं करते.”

“नहीं,” लोमड़ बोला, “लेकिन जो इतना लापरवाह होता है कि जब उसे चुप रहना चाहिए उस समय वह बकबक करने लगता है तो उस पर विपत्ति आ ही जाती है.”

“देखा,” औरत ने कहा जब लोमड़ पेड़ों के झुंड की ओर चुपके से खिसक गया, “किसी की चिकनी-चुपड़ी बातों में आने का यही परिणाम होता है.”

और अपनी बेटियों और पशुओं के साथ वह छोटी घाटी में स्थित अपने घर की ओर चल दी.